दादाजी की पेंसिल

माइकल

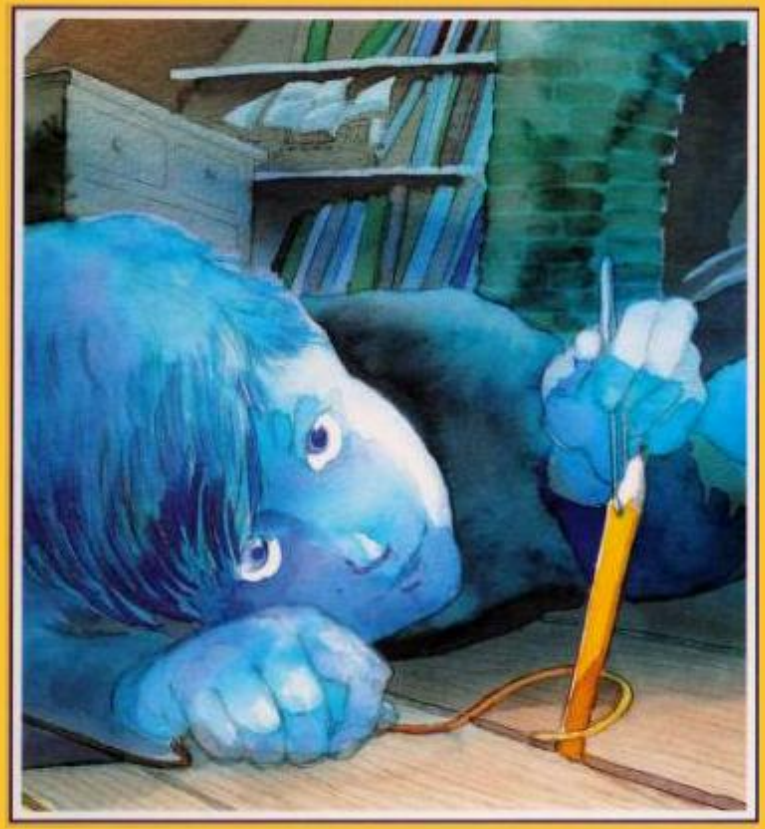

दादाजी की पेंसिल

माइकल

पिछली विलक्षण यात्रा में जैक और उनके दादा से मिलने के बाद अब हम उसके दादाजी के बचपन को फिर से याद करते हैं. एक सामान्य रात को लड़के ने अपनी माँ से शुभरात्रि कहा, उन्हें पुच्ची दी और फिर सोने चला गया. सोते समय उसने एक सपना देखा. सपने में उसने अपनी पेंसिल को लिखते हुए सुना. पेंसिल लड़के के कागज, उसकी मेज, दरवाज़े और फ़र्श आदि की कहानियां लिख रही थी. वे कहानियाँ कितनी रोमांचकारी थीं! जंगल में उनकी उत्पत्ति के किस्से और रोमांचक यात्राएं जिससे वो उस लड़के के घर तक पहुंची, जहां लड़के ने उन्हें चांदनी रात में उत्साह के साथ नृत्य करते देखा.

कई साल बाद दादाजी ने उस मंत्रमुग्ध उड़ान के बारे में जैक को बताया. और अब जैक ठीक उसी कमरे में सोता है. जैक को दादाजी की कहानियों में पूरा विश्वास है, और फिर वो घर वापिस आकर सीधे उस पेंसिल को ढूंढता है. वहां पर एक नया जादू उसका इंतज़ार करता है.

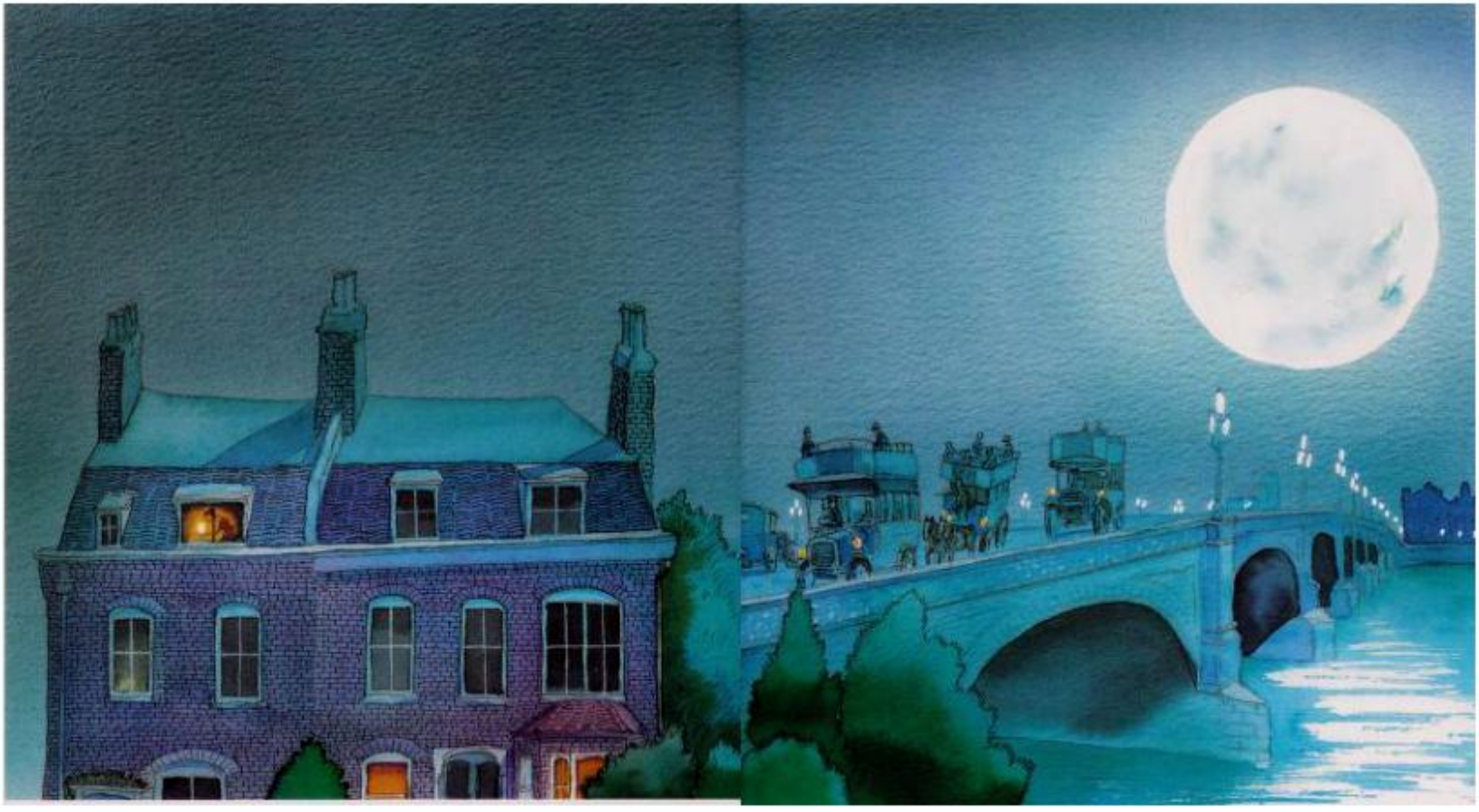

लड़के ने अपने पिता को पत्र लिखा.

फिर उसने अपनी पेंसिल नीचे रखी और बिस्तर पर लेट गया.

उसने अपनी माँ को शुभरात्रि कहा और पुच्ची दी. सबकुछ शांत था. घर चांदनी में सोया था. लड़का अपने बिस्तर में सपने देखता रहा. पेंसिल कागज पर रखी थी.

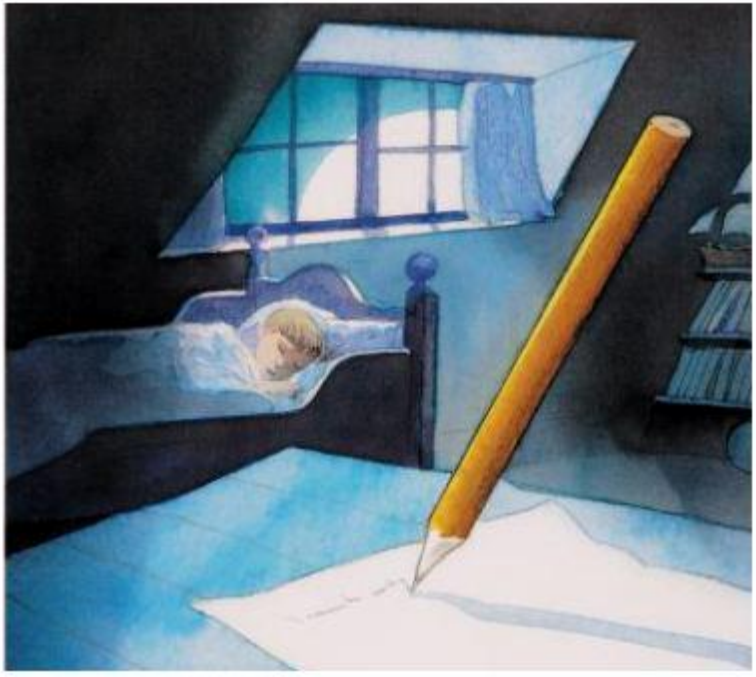

फिर एक कर्कश-कर्कश ध्वनि सुनाई पड़ी.
पेंसिल, कागज़ पर कुछ लिख रही थी.
"मुझे याद है," पेंसिल ने लिखा. "मुझे याद है जब मैं पहली बार इस घर में आई थी. मैं अपने दोस्तों के साथ एक बक्से में बंद थी. हम सभी अलग-अलग रंग के थे. लड़के को वो पेन्सिलें उपहार में मिलीं थीं."

"मुझे वह दुकान भी याद है, जहाँ से हमें खरीदा गया था. वहां पर अलमारियाँ स्याही की बोतलों से भरी थीं और पेंट्स के बक्से सैनिकों की तरह एक कतार में सजे थे."

"और कागज - वहां तमाम प्रकार के कागज - चिकने, मोटे, पतले, दुनिया भर से कागज थे. ओह, उन्होंने उस अँधेरे में मुझे क्या ज़बरदस्त कहानियां सुनाईं!"

"मुझे वह जंगल याद है जहाँ
पेंसिल बनने से पहले हम रहते
थे. मैं एक बहुत ऊँचे पेड़ की
टहनी थी. मैं सपनों में अभी भी
खुद को हवा में लहराते हुए
महसूस करती हूँ."
फिर लड़के के कमरे में
हल्के हवा के एक झोंके ने
कागज को उड़ाया.
फिर जैसे-जैसे कागज ने अपनी
कहानी सुनाई, वैसे-वैसे पेंसिल
ने उसे लिखा . . .

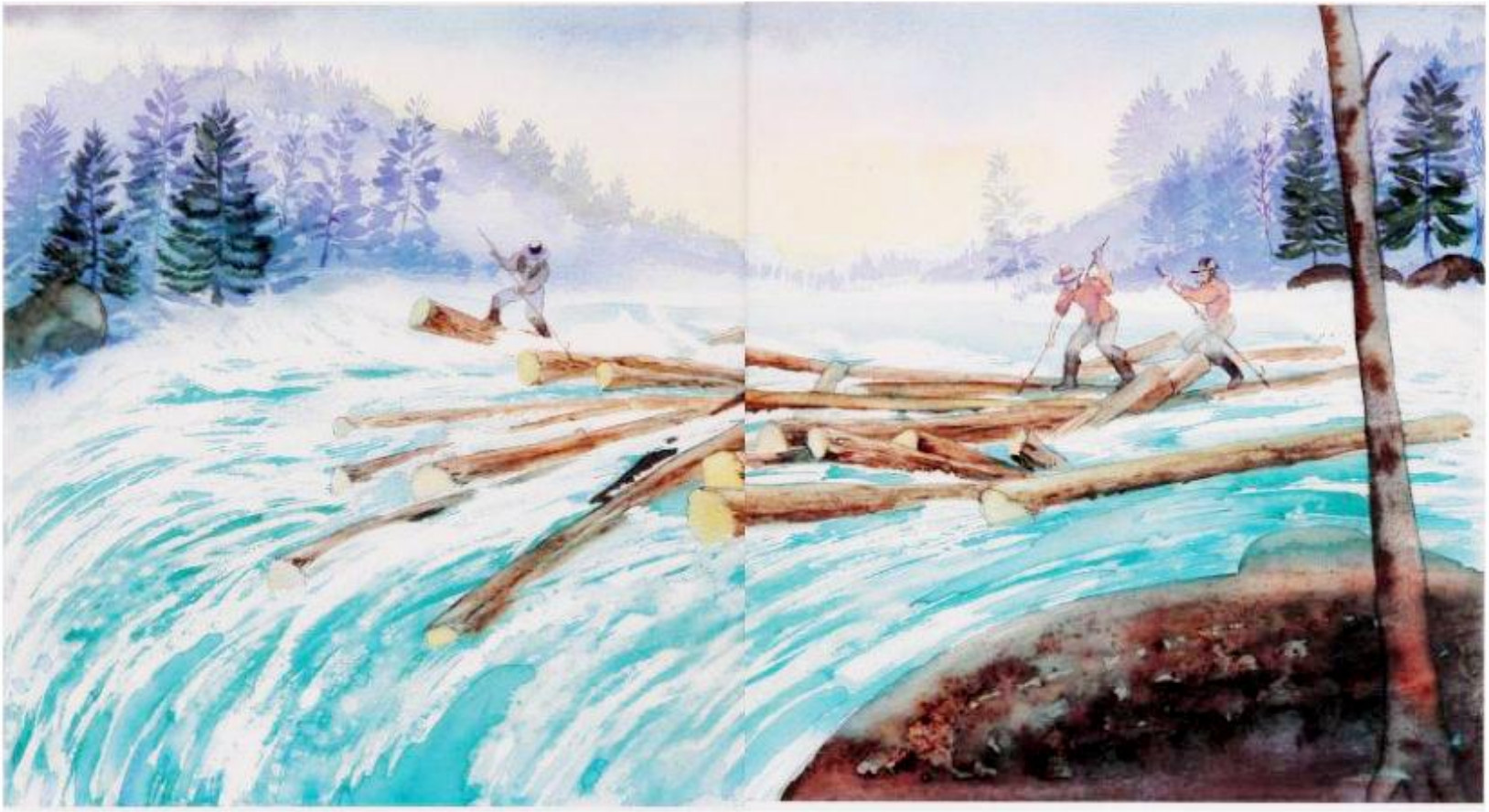

"मुझे यह भी याद है कि जब बहुत से लकड़हारे पेड़ों को काटने आये. मुझे याद है - मोटे और भारी तनों का खींचना और नदी की रोमांचकारी यात्रा," कागज ने कहा.

"मुझे भी याद है वो यात्रा," मेज़ भी अब कहानी में शामिल हो गई. "तेज़ पानी की धार में तैरना और लहरों के थपेड़े और फिर बिजली की आरी के ब्लेड की आवाज़ भी मुझे याद हैं."

"और फिर वर्कशॉप में शांति छा गई
का और फिर मुझे किसी ने बड़े प्रेम से
तराश कर एक मेज़ बनाया."

जब पेंसिल ने मेज़ की कहानी लिखी तब कमरे में बाकी सभी शांत थे.
"क्या तुम्हें जंगल के उन शुरुआती दिनों की याद आती है?" दरवाज़े ने धीरे से खुलते हुए कहा. "हमारी उम्मीदें और सपने? क्या हम जंगल में सुरक्षित रहेंगे या दुनिया की यात्रा करेंगे? हम लोग एक लंबा सफर तय कर चुके हैं, लेकिन लड़के को अभी बहुत दूर जाना है."
लड़के ने अपने बिस्तर में कुछ हलचल की. कमरे के लकड़ी के फर्श पर चांदनी फैली थी.

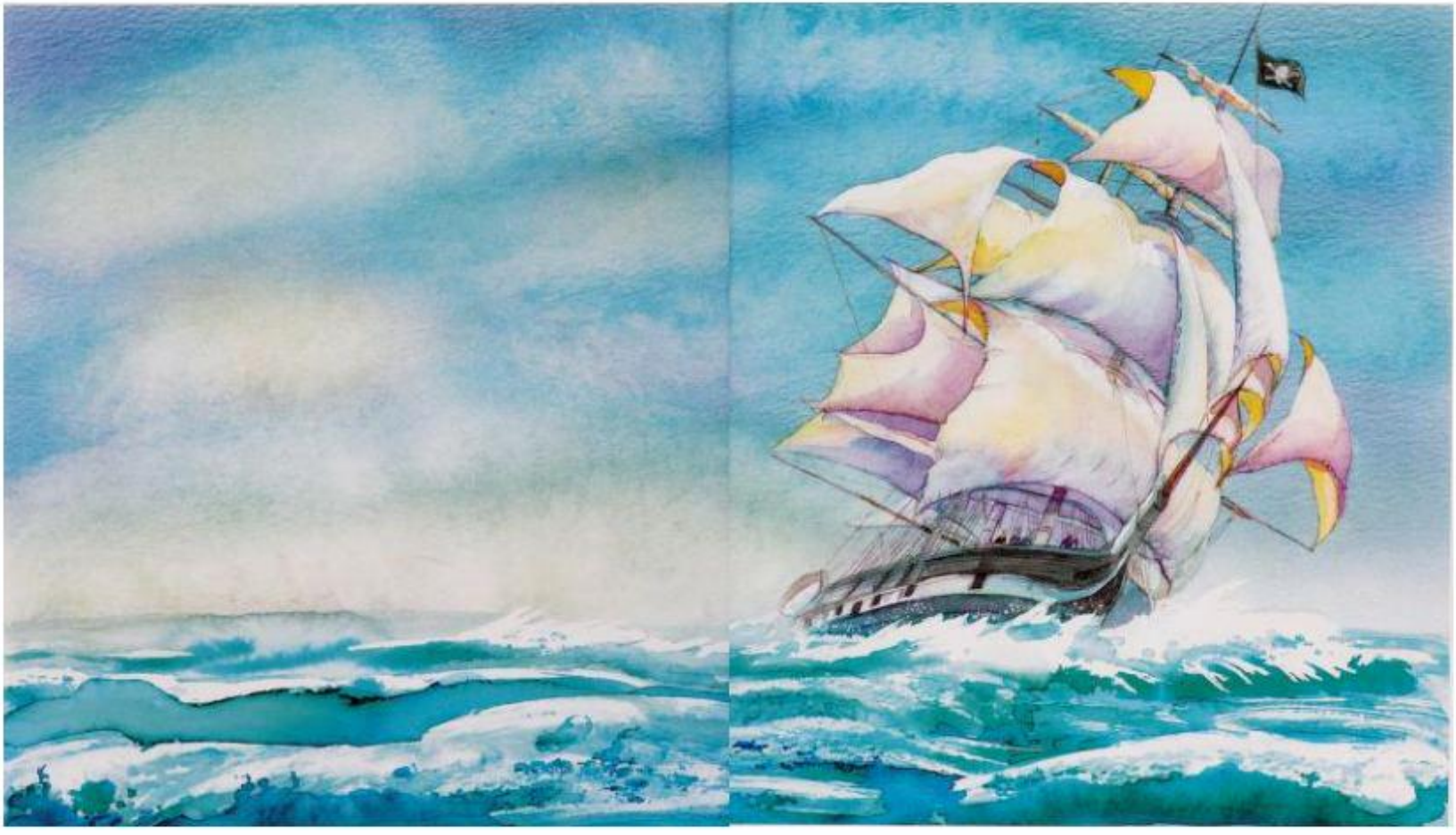

"हम आप सब से पहले आए हैं," फर्श के लकड़ी के पटरों ने कहा. "इस घर के निर्माण से बहुत पहले हम एक बड़े जहाज का हिस्सा थे. जहाज़ में पीले रंग की पाल और एक काला झंडा था."

"हम कोलतार और नमक पर जीते थे और हमें समुद्र की हवा के नमकीन झोंके बेहद पसंद थे. काश, हम उस हवा को फिर से महसूस कर पाते!"

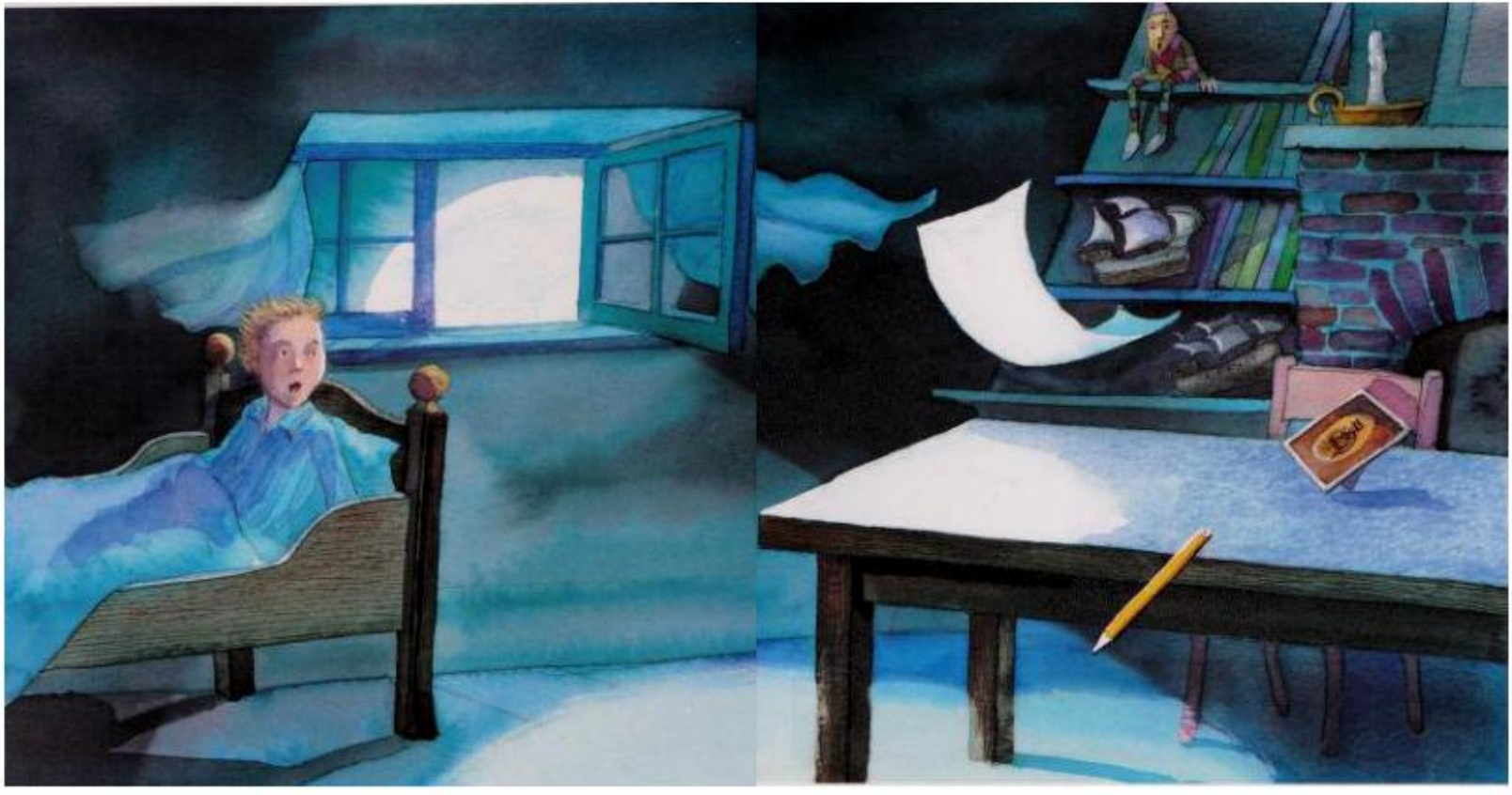

पुरानी लकड़ी की खिड़की खुली और उनसे कहा,
"तुम उसे ज़रूर महसूस कर पाओगे."
फिर रात की हवा पागलों की तरह कमरे में घुसी.

लड़का उठ बैठा, उसकी आँखों में चमक थी. दरवाज़ा अपने कब्ज़ों पर नाचने लगा, पेंसिल मेज़ से लुढ़ककर फर्श की चांदनी में तैरने लगी, और कागज़, खिड़की से बाहर उड़ गया.

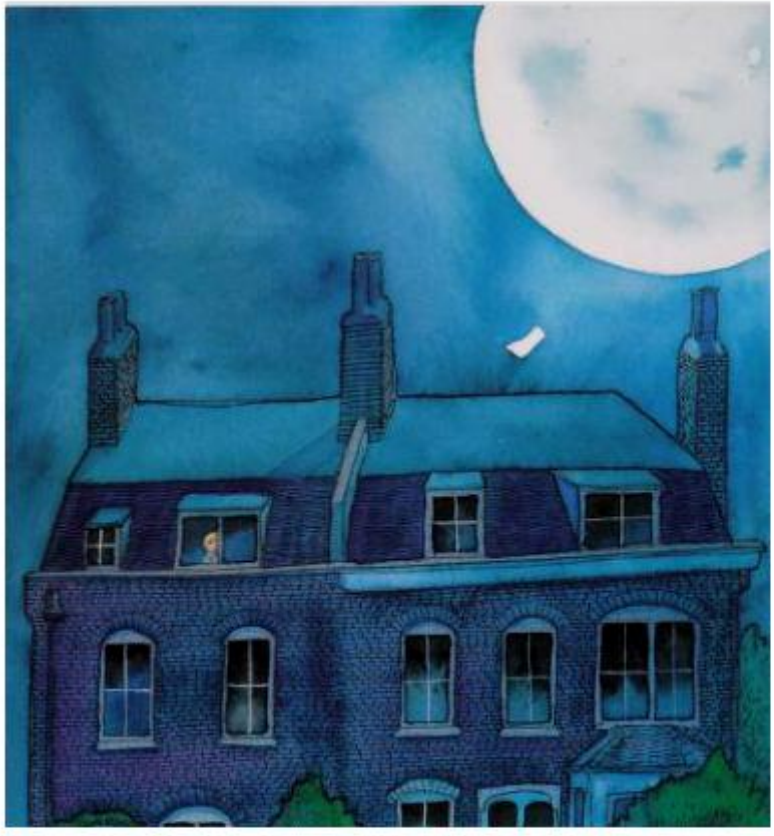

शहर के बाहर, ऊपर आसमान में उड़ता हुआ कागज़ अंत में जंगल में एक पेड़ की सबसे ऊंची शाख पर जाकर लटका.

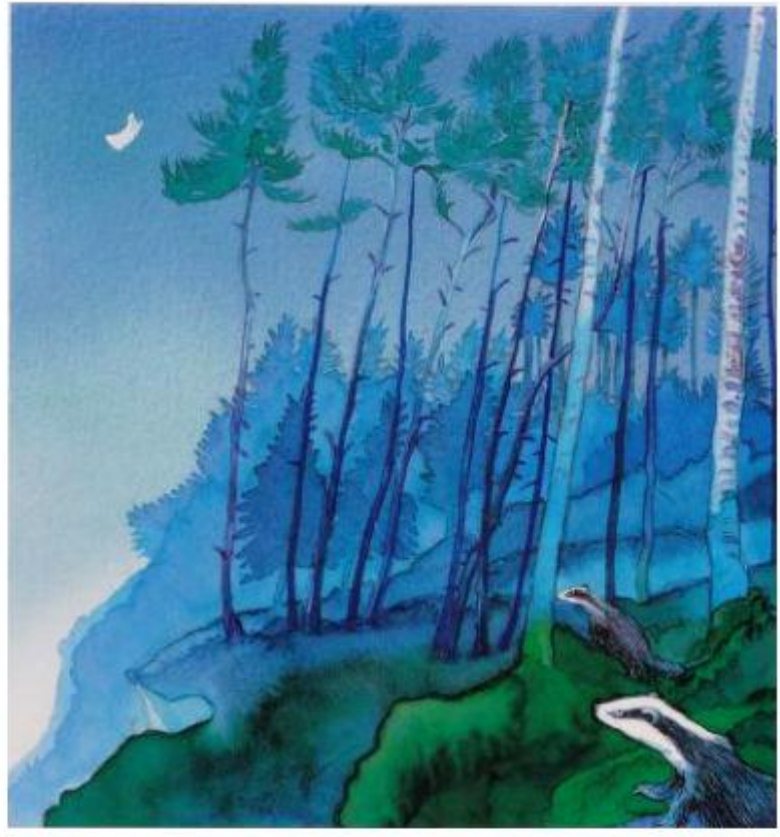

फिर पेंसिल, कागज, दरवाज़े, और फ़र्श की उन कहानियों को, हवा ने टुकड़े-टुकड़े करके फाड़ दिया।

पक्षियों ने उन किस्से-कहानियों के टुकड़ों को अपने घोंसलों में बुना और उन कहानियों को अपने बच्चों को सुनाया. जंगल के सभी जानवरों ने वो कहानियां सुनीं. फिर वे कहानियां जंगल में पेड़ों के सबसे ऊंचे पत्तों से लेकर पेड़ों की गहरी जड़ों तक फैल गईं. अब वो कहानियाँ जंगल में वापिस आ गई थीं.

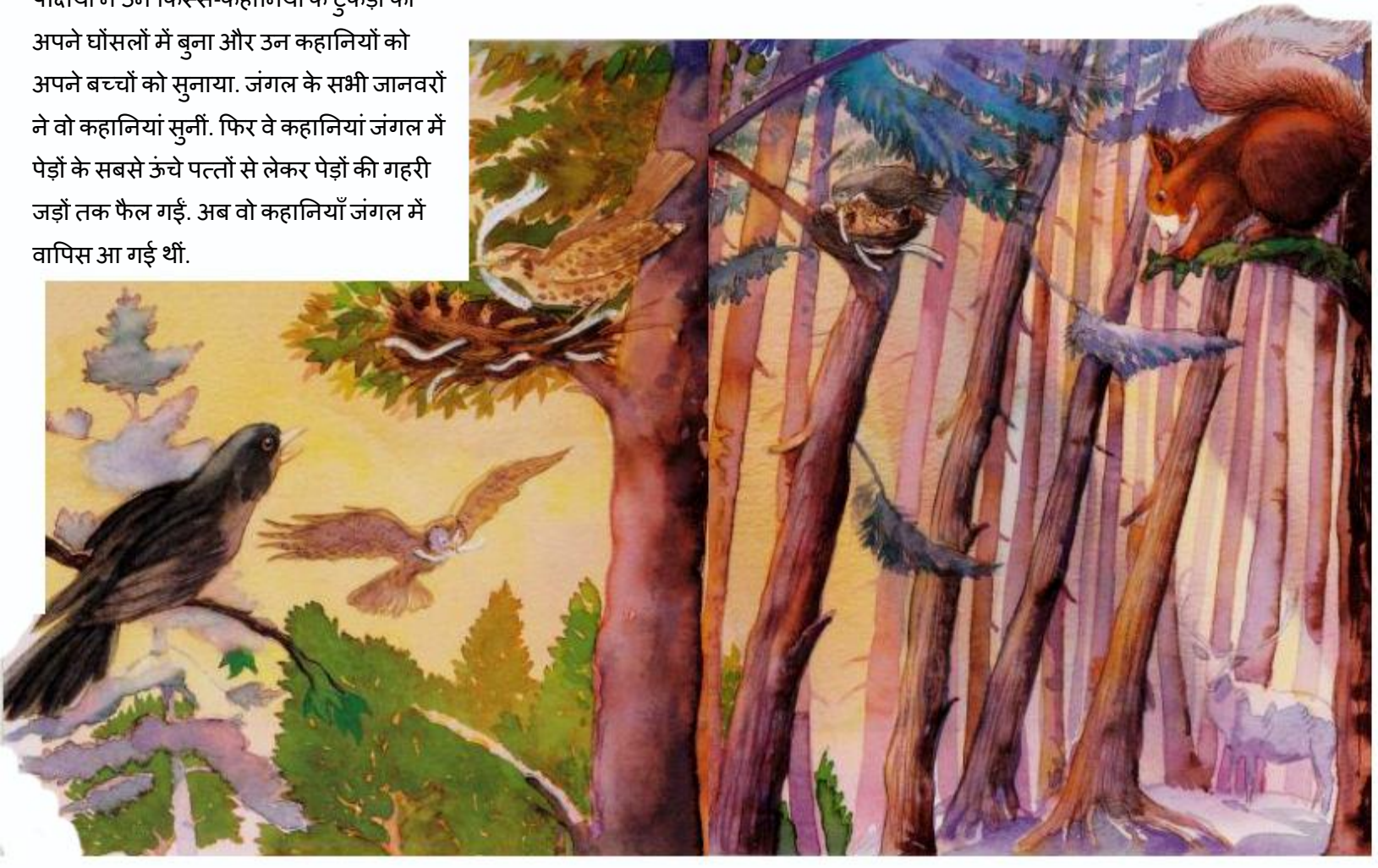

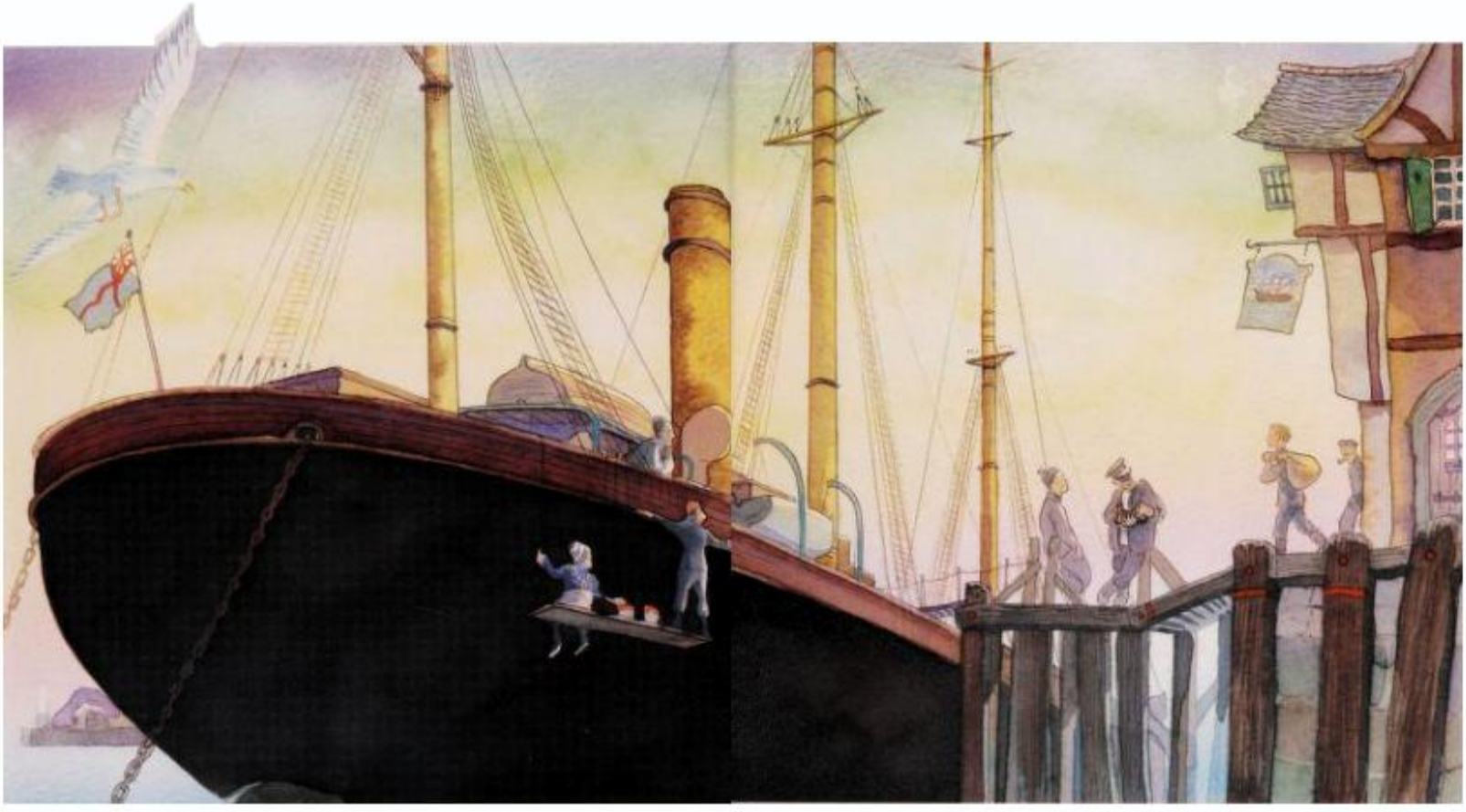

पर उस लड़के का क्या हुआ?
उस लड़के को तो अभी बहुत दूर जाना था?

जब वो बड़ा हुआ तो उसने दुनिया
के महासागरों को पार किया.

जब वो समुद्री यात्रा करने के लिए बहुत बूढ़ा हो गया, तो वो समुद्र के किनारे एक लकड़ी के घर में रहने लगा जहाँ वो अपने पोते जैक को, अपनी कहानियाँ सुनाता था. रात को वो सपनों के समुद्र में सोता था. फिर, एक रात जब उसके कमरे में तेज़ हवा चली तब उसने जैक को अपने बचपन की कहानी सुनाई. फिर दरवाजा नाचने लगा था, और पेंसिल अपनी नोक पर खड़े होकर फर्श की चांदनी में गिरकर लुप्त हो गई.

"वो सब तुम्हारे ही कमरे में हुआ था, जैक. तुम्हारे शहर वाले घर में."

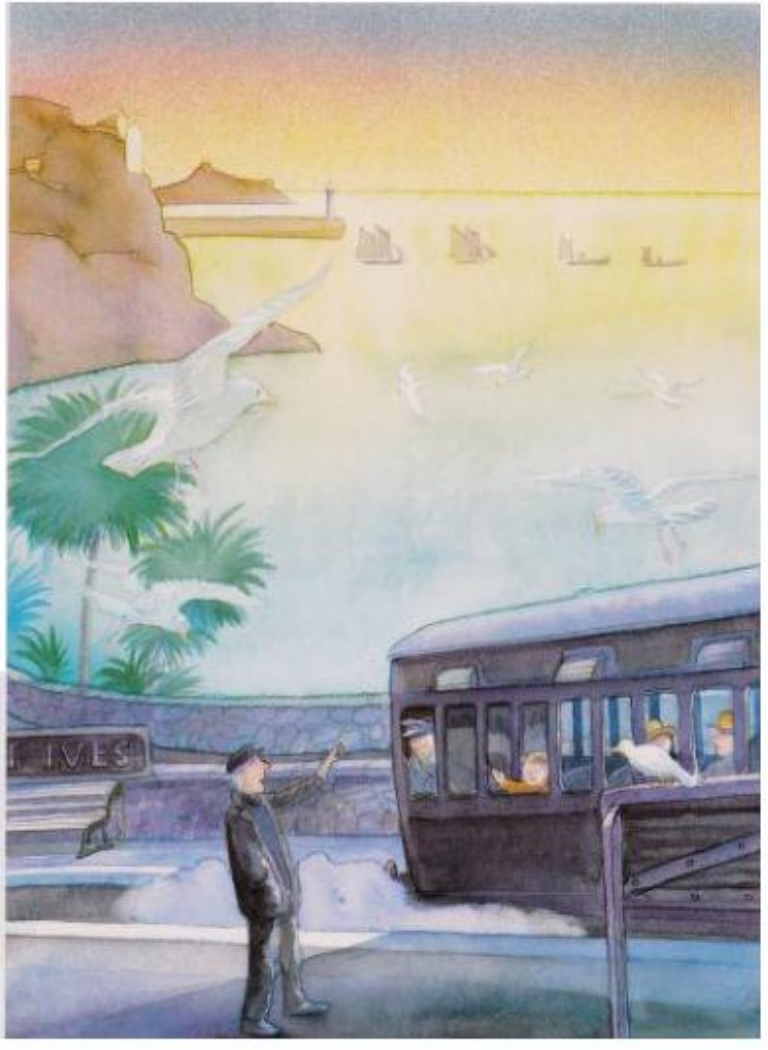

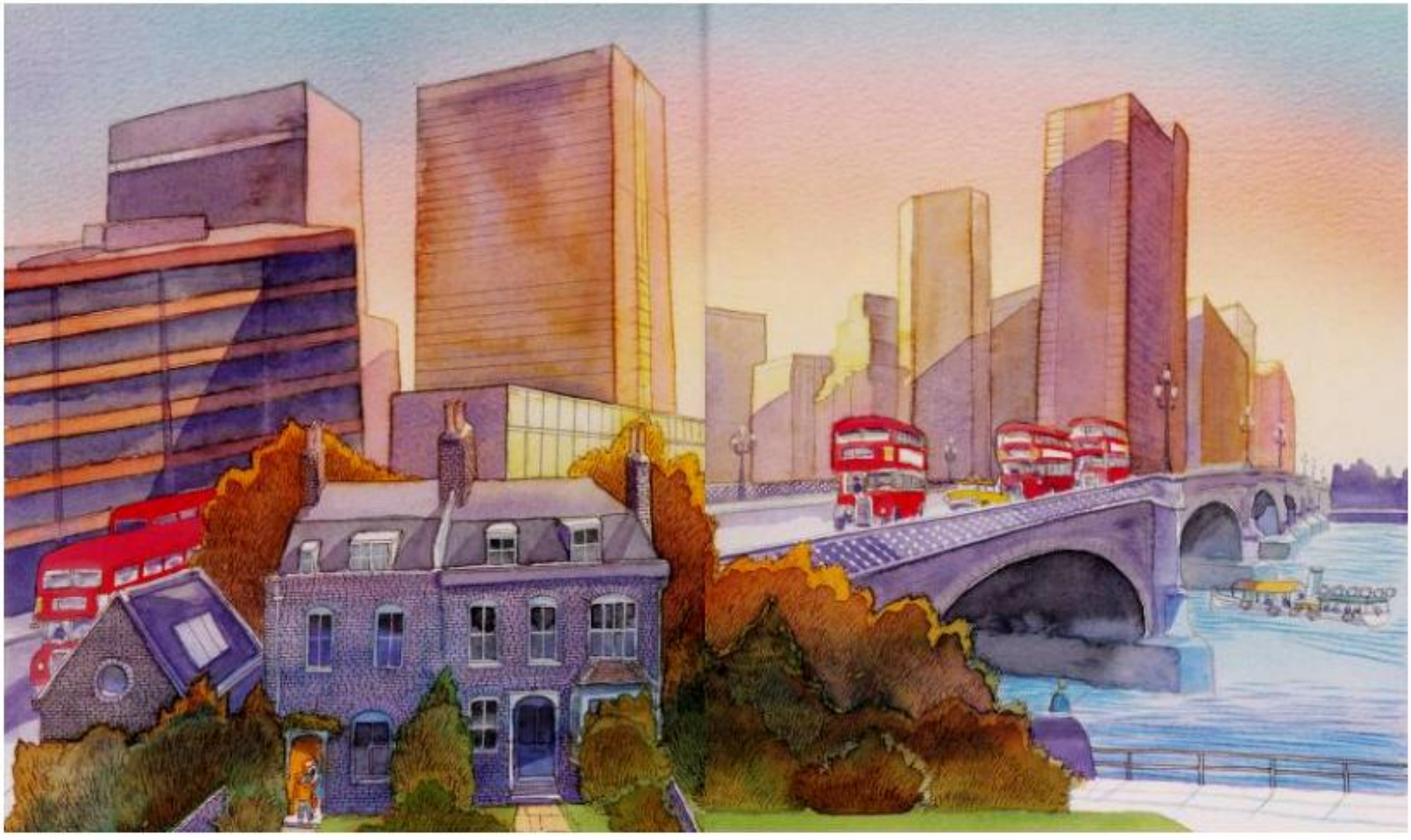

फिर जब जैक शहर वापिस गया तो
सबसे पहले वो अपने कमरे में गया.

वो फर्श पर लेट गया और उसने लकड़ी के पुराने पटरों के बीच की दरारों को कुरेदा. वहां उसे कुछ भी नहीं दिखा. वहां घोर अँधेरा था.

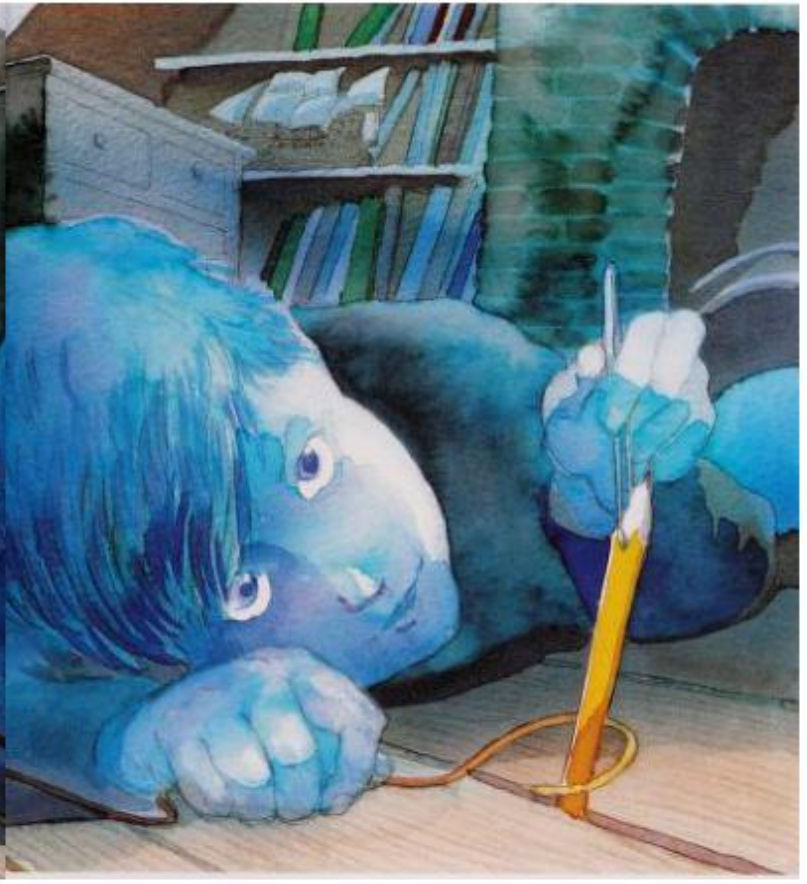

फिर जैक ने तार के कोट हैंगर को मोड़कर एक हुक बनाया और उसे फिर उसने पटरों के बीच की दरारों को कुरेदा. तब उसे अपनी खुद की ऐसी कई चीजें मिलीं जिन्हें वो खो चुका था और शायद अब भूल भी गया था. अंत में, उसे वहां एक पुरानी पेंसिल मिली!

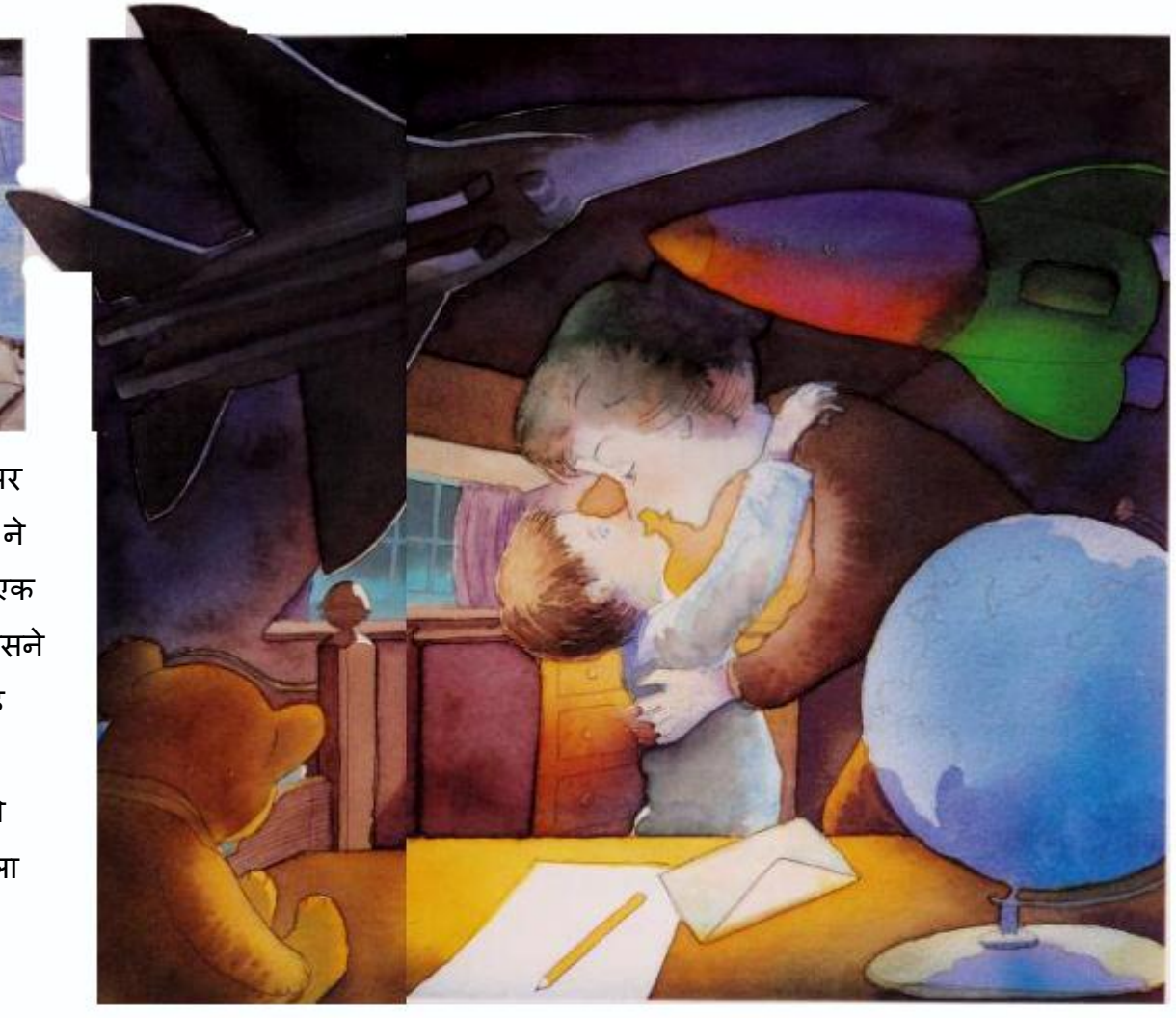

उसने पेंसिल से अपने नोट-पैड पर एक रेखा बनाई. उसके बाद जैक ने अपने दादाजी को धन्यवाद का एक सुंदर पत्र लिखा. पत्र के अंत में उसने लिखा, "मुझे वो पेंसिल मिल गई है!”

फिर माँ ने आकर उससे शुभरात्रि कहा और उसके बाद वो सोने चला गया.

पेंसिल, कागज पर पड़ी रही.

सब कुछ शांत था.

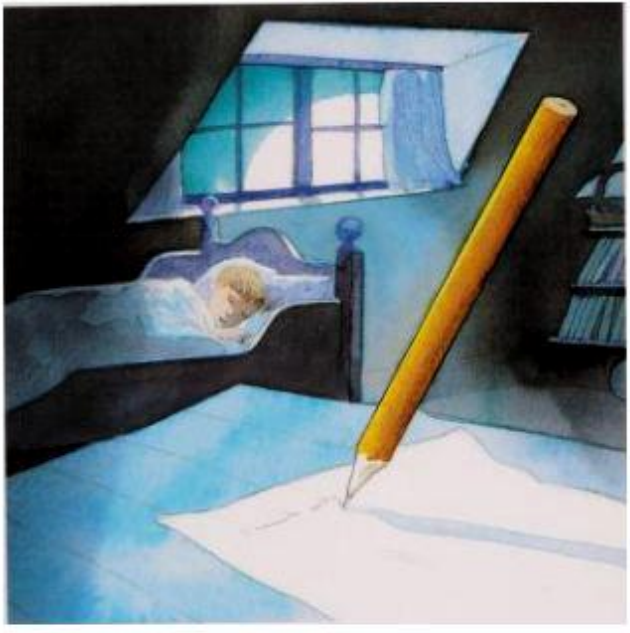

खरोंच-खरोंच! पेंसिल ने लिखना शुरू किया.

"कई सालों से मैं अंधेरे में पड़ी थी. वहां मेरे साथी थे - एक मुड़ी पिन, सोने का एक पुराना सिक्का और व्हेल की हड्डी का एक बटन. उन्होंने मुझे कितनी बढ़िया कहानियां सुनाईं! व्हेल बटन ने वो कहानी बताई जब वो एक महान व्हेल का हिस्सा था और.....

..... लेकिन वो एक दूसरी कहानी है.

समाप्त